क्यों एक मौत जरूरी है?

आवाज़ को चीख बनाने को?
क्यों एक मौत जरूरी है,
जज़्बातों को अल्फाज़ बनाने को?
सुना है खामोशियां भी चिल्लाती हैं परेशान होकर,
पर क्यों एक मौत जरूरी है,

बहरों को सुनाने को?
क्यों एक मौत जरूरी है,
लहू को लावा बनाने को?
क्यों एक मौत जरूरी है,
मातृ भूमि को बचाने को?
देखा है बिना गोलियों के जीतते लोगों को लड़ाईयां,
फिर क्यों एक मौत जरूरी है,
दुश्मन को दोस्त बनाने को?

क्यों एक मौत जरूरी है,
इन्सान कहलाने को?
क्यों एक मौत जरूरी है,
समाज में इज्ज़त पाने को?
आदर करें सभी का कहते यही हैं जब,
फिर क्यों एक मौत जरूरी है,
मन से छुआछूत मिटाने को?

क्यों एक मौत जरूरी है,
उस ब्रम्हांड निर्माता को मनाने को?
क्यों एक मौत जरूरी है,
अपनी आस्था दिखाने को?

कण कण में ईश्वर हैं यही सुना है जब,
फिर क्यों एक मौत जरूरी हैं.
आप को विपदा से बचाने को?

जरूरी नहीं कि सुन लेंगे बहरे,
जरूरी नहीं कि दोस्त बन जाएं दुश्मन भी,
जरूरी नहीं कि मिल जाए सभी को इज्ज़त,
जरूरी नहीं कि प्रसन्न हो जाएं ईश्वर,

बस एक मौत जरूरी है यहां,

कुछ दिन मोमबत्तियां जलाने को,
कुछ दिनों तक शोर मचाने को,
कुछ उत्पात मचाने को,
कभी दरिंदों को बचाने को,
तो कभी साहब की कुर्सी बचाने को।

- मणीवेंद्र।